नईदुनिया

माउंट एवरेस्ट बेस कैंप में भारी बर्फबारी, सात विदेशी पर्यटकों का रेस्क्यू

काठमांडू

विश्व की सबसे ऊंची चोटी माउंट एवरेस्ट के बेस कैंप और आसपास के ऊंचाई वाले क्षेत्रों में भारी बर्फबारी के बाद पर्वतारोहियों की चढ़ाई पर अगले आदेश तक रोक लगा दी गई है। खराब मौसम के बीच बर्फबारी में फंसे सात विदेशी पर्यटकों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया गया है।

नेपाल के सोलुखुम्बु जिले के खुम्बु क्षेत्र में लगातार बारिश के बाद ऊंचाई वाले इलाकों में भारी बर्फबारी शुरू हो गई। कई स्थानों पर आधा मीटर से अधिक बर्फ जमा होने की सूचना है, जिससे पर्यटकों और पर्वतारोहियों की आवाजाही प्रभावित हुई है।

प्रशासन ने सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए पर्यटकों और ट्रेकर्स को जोखिम वाले ऊंचाई वाले क्षेत्रों की ओर आगे बढ़ने से रोक दिया है। स्थानीय प्रशासन, जनप्रतिनिधियों, स्थानीय लोगों और पुलिस के समन्वय से ऊपरी इलाकों में मौजूद पर्यटकों को सुरक्षित स्थानों पर रखने की व्यवस्था की जा रही है।

सोलुखुम्बु के प्रमुख जिला अधिकारी कमानसिंह थापा मगर ने बताया कि खुम्बु के ऊपरी इलाकों में लगातार भारी बर्फबारी हो रही है। कई जगहों पर आधा मीटर से अधिक बर्फ जमा होने की जानकारी मिली है।

भारी बर्फबारी के कारण सगरमाथा क्षेत्र के इम्जा छे यानी आइलैंड पीक इलाके में सात विदेशी पर्यटक फंस गए थे। प्रशासन के अनुसार, इन पर्यटकों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचा दिया गया है। स्थानीय जनप्रतिनिधियों और लोगों की मदद से खराब मौसम और मुश्किल रास्तों के बीच रेस्क्यू अभियान चलाया गया।

इम्जा छे, जिसे आइलैंड पीक के नाम से भी जाना जाता है, सगरमाथा राष्ट्रीय उद्यान के खुम्बु क्षेत्र में स्थित प्रमुख पर्वतारोहण स्थलों में से एक है। इसकी ऊंचाई समुद्र तल से करीब 6,165 मीटर है।

नेपाल पर्यटन बोर्ड के अनुसार, दिंगबोचे से इम्जा खोला होते हुए चुकुंग की ओर जाने वाला ट्रेकिंग मार्ग सगरमाथा बेस कैंप क्षेत्र के प्रमुख ट्रेकिंग मार्ग से जुड़ता है।

प्रतिकूल मौसम को देखते हुए प्रशासन ने ऊपरी क्षेत्रों में अतिरिक्त पर्यटकों और ट्रेकर्स के प्रवेश पर भी रोक लगाने के लिए स्थानीय निकायों और सुरक्षा एजेंसियों के साथ समन्वय किया है। फिलहाल एवरेस्ट बेस कैंप क्षेत्र में 1,200 से अधिक पर्यटक मौजूद हैं।

स्थानीय प्रशासन, पुलिस और अन्य संबंधित एजेंसियां इन पर्यटकों की स्थिति पर लगातार नजर रख रही हैं। प्रशासन ने पर्यटकों और पर्वतारोहियों से मौसम की स्थिति को देखते हुए जोखिम वाले क्षेत्रों में आगे नहीं बढ़ने और स्थानीय प्रशासन के निर्देशों का पालन करने की अपील की है।

न्यूज़ब्रीफ

नेपाल के 25 जिलों में वाहनों के संचालन पर रोक, भारी बारिश का रेड अलर्ट

काठमांडू। बंगाल की खाड़ी में बने निम्न दबाव वाले क्षेत्र के प्रभाव से नेपाल के कई हिस्सों में बारिश शुरू हो गई है। मौसम विभाग के पूर्वानुमान को देखते हुए राष्ट्रीय आपदा जोखिम न्यूनीकरण तथा प्रबंधन प्राधिकरण (एनडीआरआरएमए) ने शनिवार को पश्चिम नेपाल के 25 जिलों में वाहनों के संचालन पर पूरी तरह रोक लगाने का निर्देश दिया है। एनडीआरआरएमए ने शुक्रवार देर शाम जारी सूचना में कहा कि इन जिलों में शनिवार को अत्यधिक बारिश होने की आशंका है। रेड अलर्ट जारी किए गए इन जिलों में कर्णाली, सुदूरपश्चिम, लुंबिनी और गंडकी प्रदेश के जिले शामिल हैं। यहां शनिवार को पूरे दिन यातायात संचालन बंद रखने का निर्देश दिया गया है। रेड अलर्ट वाले 25 जिले जिसमें सुदूरपश्चिम प्रदेश के दार्चुला, बझांग, बाजुरा, कैलाली और कंचनपुर। कर्णाली प्रदेश के डोल्पा, जुम्ला, कालीकोट, मुगु, हुम्ला और सुर्खेत। लुंबिनी प्रदेश के प्युठान, दांग, रुपन्देही, पाल्पा, अर्घाखांची, गुल्मी, कपिलवस्तु, बांके और बर्दिया। गंडकी प्रदेश के मनांग, मुस्तांग, गोरखा, लमजुंग और स्यांगजा शामिल है। इसके अलावा 30 जिलों में भारी बारिश की संभावना जताई गई है। इन जिलों में कोशी और मधेश प्रदेश को छोड़कर अन्य पांच प्रदेशों के जिले शामिल हैं। इन जिलों के लिए आरेंज अलर्ट जारी किया गया है। यहां रात के समय यातायात बंद रखने का निर्देश दिया गया है। दिन के समय वाहनों का संचालन किया जाएगा या नहीं, इसका फैसला स्थानीय मौसम और परिस्थितियों को देखते हुए जिला मानसून प्रतिक्रिया कमांड पोस्ट को करने के लिए कहा गया है। वहीं, नेपाल के 22 अन्य जिलों में हल्की से मध्यम बारिश होने का अनुमान है। इनमें कोशी और मधेश प्रदेश के जिले तथा बागमती प्रदेश के मकवानपुर और सिंधुली जिले शामिल हैं। इन जिलों में लोगों को सतर्क रहने और मौसम की स्थिति पर नजर बनाए रखने की सलाह दी गई है। प्रशासन ने भारी बारिश की आशंका वाले क्षेत्रों में लोगों से अनावश्यक यात्रा से बचने और स्थानीय प्रशासन के निर्देशों का पालन करने की अपील की है।

नेपाल और सर्बिया के बीच द्विपक्षीय परामर्श तंत्र स्थापित करने के लिए समझौता

काठमांडू। नेपाल और सर्बिया ने अपने विदेश मंत्रालयों के बीच द्विपक्षीय परामर्श तंत्र स्थापित करने के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। संयुक्त राष्ट्र महासभा के 81वें सत्र के दौरान न्यूयार्क में आयोजित एक कार्यक्रम में नेपाल के विदेश मंत्री शिशिर खनाल और सर्बिया के विदेश मंत्री मार्को ज्यूरिच ने समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। समझौते पर हस्ताक्षर के अवसर पर दोनों मंत्रियों ने इस महत्वपूर्ण समझौते के होने पर खुशी व्यक्त की। दोनों ने नेपाल और सर्बिया के बीच करीबी और सहयोगात्मक द्विपक्षीय संबंधों के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की। बैठक में जलवायु कार्रवाई के क्षेत्र में मजबूत वैश्विक एकजुटता और सहयोग के महत्व पर भी विचार-विमर्श किया गया।

नवंबर में खत्म हो जाएगा ट्रंप का राज, न्यूसम ने मिडटर्म चुनाव का किया दावा

वाशिंगटन। अमेरिका में नवंबर में होने वाले मिडटर्म चुनाव से पहले राजनीतिक हलचल तेज है। कैलिफोर्निया के गवर्नर गेविन न्यूसम ने दावा किया है कि डेमोक्रेटिक पार्टी प्रतिनिधि सभा में फिर बहुमत हासिल कर सकती है। उनके मुताबिक, अगर ऐसा होता है तो राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के लिए मौजूदा राजनीतिक परिस्थितियां बदल जाएंगी। न्यूसम ने कहा कि नवंबर के चुनाव के बाद ट्रंप का राष्ट्रपति पद उस रूप में नहीं रहेगा, जैसा अभी है। हालांकि, उन्होंने यह स्पष्ट नहीं किया कि प्रतिनिधि सभा में बहुमत बदलने से राष्ट्रपति का पद सीधे तौर पर कैसे प्रभावित होगा। अमेरिकी व्यवस्था में राष्ट्रपति का कार्यकाल चुनाव के बीच में अपने आप समाप्त नहीं होता। लेकिन कांग्रेस के किसी एक या दोनों सदनों पर विपक्षी दल का नियंत्रण होने से राष्ट्रपति के विधायी एजेंडे और नीतियों पर राजनीतिक अड़चनें बढ़ सकती हैं। न्यूसम ने इसे ट्रंप प्रशासन के लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ के तौर पर पेश किया। उन्होंने 2028 के राष्ट्रपति चुनाव को लेकर भी डेमोक्रेटिक पार्टी के भविष्य पर टिप्पणी की। न्यूसम ने कहा कि अगला राष्ट्रपति डेमोक्रेटिक पार्टी से हो सकता है। उन्होंने रिपब्लिकन नेताओं मार्को रुबियो और जेडी वेंस का भी उल्लेख किया, जिन्हें भविष्य की राष्ट्रीय राजनीति में महत्वपूर्ण चेहरों के तौर पर देखा जाता है।

प्रयोगशाला में तैयार हो रही आत्मनिर्भरता की नई फसल

जम्मू का आईआईआईएम बना युवाओं का स्टार्टअप अड्डा

डॉ. शिशिर उपाध्याय, जम्मू

जब देश में स्टार्टअप की बात होती है तो दिमाग में बेंगलुरु या हैदराबाद का नाम आता है, लेकिन अब इस नक्शे पर जम्मू का नाम भी तेजी से उभर रहा है। इसकी वजह है कनाल रोड स्थित सीएसआईआर भारतीय समवेत औषध संस्थान यानी आईआईआईएम। यह संस्थान अब सिर्फ दवा की खोज तक सीमित नहीं रहा, बल्कि लैब की खोज को लोगों की आजीविका से जोड़ने का सफल मॉडल बन गया है। कभी 1941 में जम्मू-कश्मीर सरकार की ड्रग रिसर्च लेबोरेटरी के रूप में शुरू हुआ यह संस्थान 1957 में सीएसआईआर से जुड़ा और आज यह जम्मू-कश्मीर की बायो-इकोनॉमी का इंजन बन चुका है। संस्थान की कार्यप्रणाली को नजदीक से देखने का मौका मिला।

बैंगनी क्रांति और किसानों की बदली तकदीर

आईआईआईएम की दूसरी बड़ी सफलता है एरोमा मिशन। इस मिशन ने डोडा और किश्तवाड़ की पहाड़ियों का रंग ही बदल दिया है। जहां कभी मक्का और गेहूं की कम पैदावार से किसान परेशान थे, वहीं आज उन्हीं खेतों में लेवेंडर के बैंगनी फूल लहलहा रहे हैं। डोडा को आज देश की लेवेंडर कैपिटल कहा जाता है। संस्थान किसानों को सिर्फ बीज नहीं देता, बल्कि पौधे उगाने से लेकर तेल निकालने और उसे बेचने तक की पूरी ट्रेनिंग देता है। फ्लोरीकल्चर मिशन और स्मार्ट एग्रीकल्चर मिशन के तहत भी फूलों की खेती और आधुनिक खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है। इससे हजारों किसानों की आय दोगुनी हुई है और पलायन रुका है।

विश्वस्तरीय शोध का केंद्र

इस सबके बीच आईआईआईएम अपना मूल काम, यानी नई दवाओं की खोज, नहीं भूला है। संस्थान प्राकृतिक उत्पादों से कैंसर, टीबी जैसी गंभीर बीमारियों के लिए दवा खोज रहा है। हाल ही में आईआईआईएम ने दुनिया के प्रसिद्ध वैज्ञानिक प्रो. मिग्नानी के साथ हाथ मिलाया है, जिनके नाम 180 से ज्यादा पेटेंट हैं। यह साझेदारी टीबी की अगली पीढ़ी की दवा विकसित करने के लिए है। मुख्य सचिव अटल डुल्लू को ब्रीफिंग के दौरान निदेशक ने बताया कि संस्थान का लक्ष्य जम्मू-कश्मीर को औषधीय और सुगंधित पौधों का हब बनाना है। कुल मिलाकर आईआईआईएम ने साबित कर दिया है कि अगर शोध को सही दिशा और बाजार से जोड़ा जाए तो वह सिर्फ शोध पत्र नहीं, बल्कि रोजगार भी पैदा करता है। जम्मू की यह प्रयोगशाला अब सच में आत्मनिर्भर भारत की प्रयोगशाला बन गई है।

अब किताबी नहीं, फैक्ट्री वाली पढ़ाई

आईआईआईएम ने शिक्षा के तरीके को भी बदला है। हाल ही में संस्थान ने हर्बल फार्मा पर दो महीने का सर्टिफिकेट कोर्स शुरू किया है। इसमें फार्मेसी के 22 छात्रों को क्लास में लेक्चर नहीं, बल्कि फैक्ट्री में काम करने का अनुभव दिया जा रहा है। निदेशक डॉ. जबीर अहमद बताते हैं, 'हम ऐसे छात्र तैयार करना चाहते हैं जो डिग्री लेकर नौकरी के लिए भटकें नहीं, बल्कि इंडस्ट्री के लिए तैयार हों।' छात्रों को हर्बल एक्सट्रैक्शन, टैबलेट और कैप्सूल बनाना, सिरप तैयार करना, एरोमैटिक तेल बनाना, पैकेजिंग और क्वालिटी कंट्रोल की प्रैक्टिकल ट्रेनिंग दी जाती है। इसके लिए उन्हें कठुआ स्थित इंडस्ट्रियल बायोटेक पार्क ले जाया जाता है, जहां बड़े पैमाने पर उत्पादन होता है।

लैब से निकलकर बाजार तक पहुंचा विज्ञान

आईआईआईएम ने जो सबसे बड़ा काम किया है, वह है विज्ञान को अलमारी से निकालकर बाजार तक पहुंचाना। संस्थान के बायोनेस्ट इनक्यूबेटर में इस समय 64 स्टार्टअप पंजीकृत हैं। ये सभी जन-केंद्रित आइडिया पर काम कर रहे हैं। इन युवाओं ने 14 नए उत्पाद तैयार किए हैं और उनमें से 4 उत्पाद तो बाजार में बिकना भी शुरू हो गए हैं। बायोटेक में स्टार्टअप करना आईटी जैसा आसान नहीं होता। यहां आपको लैब, महंगी मशीनें और ट्रायल के लिए जगह चाहिए होती है। आईआईआईएम का बायोनेस्ट इनक्यूबेटर, जो बीआईआरएसी के सहयोग से चल रहा है, यही सुविधा युवाओं को देता है। यहां युवा अपने हर्बल प्रोडक्ट का फॉर्मूला बनाते हैं, टेस्ट करते हैं, पैकेजिंग सीखते हैं और सीधे निवेशकों से जुड़ते हैं। केंद्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह खुद कई बार कह चुके हैं कि जम्मू में स्टार्टअप की यह क्रांति आईआईआईएम की देन है।

खगोलविदों को मिला सबसे कम उम्र का ग्रह

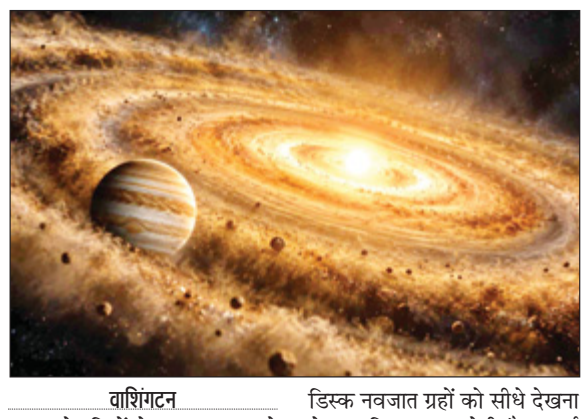

वाशिंगटन

खगोलविदों ने अब तक सबसे कम उम्र का ग्रह खोजने का दावा किया है। इसकी उम्र दस लाख साल से भी कम बताई गई है। खगोलविदों ने इस नवजात ग्रह का नाम एलियास 2-24 बी रखा है। यह ग्रह अभी भी अपने युवा तारे के चारों ओर मौजूद गैस और धूल की विशाल डिस्क के भीतर तेजी से घूम रहा है!

उसका आकार हमारे सौरमंडल के सबसे बड़े ग्रह बृहस्पति के बराबर बताया गया है। यह ग्रह पृथ्वी से करीब 450 प्रकाश वर्ष दूर स्थित है। इस खोज से ग्रहों के निर्माण को लेकर मौजूदा वैज्ञानिक माडलों के सामने नए सवाल खड़े हुए हैं। अब तक जिन सबसे युवा ग्रहों की पहचान हुई थी, उनकी उम्र कम से कम करीब 50 लाख साल मानी जाती थी। इनमें पीडीएस 70 और विस्पिट 2 जैसे तारों की परिक्रमा कर रहे ग्रह शामिल हैं। इसके मुकाबले एलियास 2-24 बी की उम्र दस लाख साल से भी कम है। वैज्ञानिकों के लिए सबसे बड़ा सवाल यह है कि इतनी कम उम्र में यह ग्रह इतना विशाल कैसे बन गया। इस ग्रह की खोज आसान नहीं थी। जब किसी तारे का जन्म होता है तो उसके आसपास गैस, धूल और बर्फ से बनी घनी डिस्क मौजूद रहती है। इसी सामग्री से धीरे-धीरे ग्रहों का निर्माण होता है। लेकिन यह घनी डिस्क नवजात ग्रहों को सीधे देखना बेहद मुश्किल बना देती है। हवाई स्थित डब्ल्यू. एम. केक वेधशाला के कोरोनाग्राफ की मदद से वैज्ञानिकों ने तारे की तेज रोशनी को रोककर उसके आसपास मौजूद बेहद धुंधली वस्तुओं का अध्ययन किया। इस खोज की कहानी करीब एक दशक पुरानी है। चिली स्थित अल्मा दूरबीन ने एलियास 2-24 तारे के चारों ओर मौजूद डिस्क में एक बड़ा खाली क्षेत्र देखा था। बाद में वेरी लार्ज टेलीस्कोप ने इसी क्षेत्र में रोशनी का एक बेहद हल्का बिंदु दर्ज किया। हालांकि तब यह स्पष्ट नहीं था कि वह वास्तव में ग्रह है या कोई अन्य खगोलीय संरचना। शोधकर्ताओं ने 2018 और 2020 के पुराने अभिलेखीय आंकड़ों का दोबारा विश्लेषण किया। अलग-अलग समय पर उस चमकीले बिंदु की स्थिति और गति का मिलान करने के बाद वैज्ञानिकों ने इसकी ग्रह होने की पुष्टि की। शोधकर्ताओं के अनुसार, एलियास 2-24 बी अपने तारे से पृथ्वी-सूर्य की दूरी से करीब 55 गुना अधिक दूरी पर स्थित है। यह खोज ग्रह निर्माण की प्रक्रिया को समझने के लिए महत्वपूर्ण मानी जा रही है। वैज्ञानिकों के मौजूदा माडल इतने कम समय में इतनी दूर बृहस्पति जैसे विशाल ग्रह के निर्माण को पूरी तरह समझाने में चुनौती महसूस करते हैं।

किचन की खुदाई में कपल को मिला सैकड़ों साल पुराना खजाना

यार्कशायर। इंग्लैड में करीब दस साल पहले खरीदे गए पुराने घर के किचन की मरम्मत के दौरान फर्श के नीचे दबा एक मटका मिला। जब उसे खोला गया तो उसमें चमचमाते सोने के पुराने सिक्के भरे हुए थे। यार्कशायर के एक कपल को मिले इस खजाने ने उनकी पूरी जिंदगी बदल दी। बताया जा रहा है कि यह खजाना करीब 280 साल पुराना है और इसकी कीमत करोड़ों रुपये में आंकी गई। यह घटना तब सामने आई जब कपल ने अपने पुराने घर के किचन को नया रूप देने का फैसला किया। मरम्मत के दौरान लकड़ी के पुराने फर्श को हटाया जा रहा था। खुदाई करते समय मजदूरों को जमीन के करीब छह इंच नीचे किसी कठोर वस्तु से टकराने की आवाज सुनाई दी। शुरुआत में लगा कि नीचे कोई पुराना पाइप या बेकार सामान दबा हो सकता है, लेकिन मिट्टी हटाने पर वहां एक पुराना मटका दिखाई दिया। मटके को बाहर निकालकर खोला गया तो उसमें सोने के दुर्लभ सिक्के मिले। कपल ने इसकी जानकारी स्थानीय विशेषज्ञों और संबंधित अधिकारियों को दी। सिक्कों की जांच में उनके ऐतिहासिक महत्व का पता चला। शुरुआती अनुमान के मुताबिक खजाने की कीमत करीब 2.88 लाख डालर यानी लगभग ढाई से तीन करोड़ रुपये बताई गई।

उत्तर कोरिया ने दक्षिण कोरिया को दी चेतावनी कहा - सामूहिक सजा का निशाना बनेगा सियोल

सियोल

उत्तर कोरिया ने अमेरिका और दक्षिण कोरिया के बीच बढ़ते सैन्य सहयोग की आलोचना करते हुए चेतावनी दी है कि दक्षिण कोरिया भविष्य में उसके लिए सामूहिक सजा का निशाना बन सकता है। उत्तर कोरिया के एक अधिकारी ने यह टिप्पणी अमेरिकी सेना के कोरिया में शीर्ष कमांडर जनरल जेवियर ब्रंसन की हालिया टिप्पणी के जवाब में की है।

दक्षिण कोरिया की सरकारी समाचार एजेंसी योनहाप के मुताबिक, उत्तर कोरिया के इंस्टीट्यूट आफ एनिमी स्टेट स्टडीज के सेक्शन चीफ कांग चोल-सू ने सरकारी मीडिया में प्रकाशित एक बयान में अमेरिका पर दक्षिण कोरिया को अपनी रणनीति के लिए इस्तेमाल करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि वाशिंगटन दक्षिण कोरिया को क्षेत्रीय संघर्षों में अपनी रणनीति लागू करने के लिए प्रमुख आधार के रूप में इस्तेमाल कर रहा है।

कांग ने अमेरिकी सेना के कोरिया में कमांडर जनरल जेवियर ब्रंसन की उस टिप्पणी का हवाला दिया, जिसमें उन्होंने कोरियाई प्रायद्वीप की सुरक्षा व्यवस्था को नए सिरे से तैयार करने और अमेरिका तथा दक्षिण कोरिया के साथ मिलकर प्रायद्वीप के बाहर से आने वाले खतरों से निपटने की आवश्यकता पर जोर दिया था। उत्तर कोरियाई अधिकारी ने दावा किया कि यह बयान अमेरिका-दक्षिण कोरिया गठबंधन को केवल दक्षिण कोरिया की रक्षा तक सीमित रखने की पुरानी दलील से आगे बढ़कर उसे व्यापक सामूहिक रक्षा व्यवस्था से जोड़ने की कोशिश को दर्शाता है। उन्होंने दक्षिण कोरिया के बढ़ते रक्षा खर्च की भी आलोचना की। कांग ने कहा कि दक्षिण कोरिया, जिसे अमेरिकी रणनीतिक हितों के तहत सामूहिक रक्षा का निर्णायक केंद्र बताया जा रहा है, आगे चलकर सामूहिक सजा का निर्णायक निशाना बन सकता है। यह टिप्पणी उत्तर कोरिया की ओर से जारी की गई है और इसमें दक्षिण कोरिया के खिलाफ किसी विशिष्ट सैन्य कार्रवाई का विवरण नहीं दिया गया है। यह बयान ऐसे समय आया है जब कोरियाई प्रायद्वीप पर सैन्य तनाव को लेकर दोनों पक्षों के बीच बयानबाजी जारी है। हाल के दिनों में उत्तर कोरिया ने बैलिस्टिक मिसाइलों का परीक्षण भी किया है, जबकि दक्षिण कोरिया, अमेरिका और जापान ने उत्तर कोरिया के मिसाइल प्रक्षेपणों पर आपसी चर्चा की है।

ह्यूमनॉइड रोबोट के जरिये चीन की युद्ध का तरीका बदलने की तैयारी

बीजिंग

चीन में ह्यूमनाइड रोबोटों को भविष्य में सैन्य प्रशिक्षण और युद्ध संबंधी भूमिकाओं में इस्तेमाल करने की संभावनाओं पर चर्चा तेज हो गई है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, ड्रोन और स्वायत्त हथियारों के बाद अब ह्यूमनाइड रोबोट सैन्य तकनीक की अगली बड़ी कड़ी बनते दिखाई दे रहे हैं।

चीनी पीपुल्स लिबरेशन आर्मी से जुड़े आधिकारिक अखबार में शोधकर्ताओं से उन्नत रोबोटों को प्रयोगशालाओं से बाहर निकालकर सैन्य प्रशिक्षण में इस्तेमाल करने की दिशा में तेजी लाने की अपील की गई है। हालांकि, इसका अर्थ यह नहीं है कि चीन ने रोबोट सैनिकों की कोई तैयार लड़ाकू सेना तैनात कर दी है।

चीन के ह्यूमनाइड रोबोट विकास को हाल में आयोजित वर्ल्ड ह्यूमनाइड रोबोट गेम्स जैसे आयोजनों से भी गति मिली है। इन प्रतियोगिताओं में रोबोटों की दौड़, चलने, संतुलन बनाने और

अलग-अलग शारीरिक गतिविधियां करने की क्षमता प्रदर्शित की गई। टियांगगोंग अल्ट्रा नाम के एक ह्यूमनाइड रोबोट द्वारा 100 मीटर की दौड़ 8.64 सेकंड में पूरी करने का दावा भी चर्चा में रहा। हालांकि प्रदर्शन के दौरान कुछ रोबोटों के गिरने और असंतुलित होने के वीडियो भी सामने आए, लेकिन शोधकर्ताओं के लिए यह तकनीकी विकास का हिस्सा है। सैन्य क्षेत्र में ह्यूमनाइड रोबोट का संभावित फायदा उन स्थानों पर हो सकता है जिन्हें मूल रूप से इंसानों के लिए बनाया गया है। सीढ़ियां चढ़ना, दरवाजे खोलना, संकरी जगहों में जाना या किसी वाहन के भीतर इंसान की तरह पहुंचना ऐसे काम हैं, जिनमें मानव आकार की मशीनों को डिजाइन किया जा सकता है।

इसके अलावा खतरनाक इमारतों की जांच, विस्फोटक या संदिग्ध वस्तुओं वाले क्षेत्रों की निगरानी और आपदा प्रभावित स्थानों में बचाव कार्य जैसे गैर-लड़ाकू उपयोग भी संभव हैं। इन रोबोटों की क्षमता बढ़ाने में कृत्रिम बुद्धिमत्ता और साफ्टवेयर अहम भूमिका निभा रहे हैं। रीइन्फोर्समेंट लर्निंग जैसी तकनीकों के जरिए मशीनों को सिमुलेशन वातावरण में अलग-अलग परिस्थितियों से निपटने का प्रशिक्षण दिया जा सकता है। उदाहरण के लिए रोबोट संतुलन बिगड़ने पर खुद को संभालना, बाधाओं के बीच रास्ता बनाना और बदलते वातावरण के अनुसार अपनी गतिविधियां समायोजित करना सीख सकता है।

आपरेशन सिंदूर की दहशत में बोले शहबाज- ट्रंप ने हमें बचा लिया

न्यूयार्क। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने शुक्रवार को संयुक्त राष्ट्र महासभा के 81वें सत्र को संबोधित करते हुए 2025 में भारत-पाकिस्तान के बीच हुए सैन्य संघर्ष का जिक्र किया। करीब 23 मिनट के भाषण में उन्होंने अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के कथित समय पर हस्तक्षेप की सराहना की और दावा किया कि इससे दक्षिण एशिया में बड़े पैमाने पर जान बची। ट्रंप भी भारत-पाकिस्तान संघर्ष रुकवाने में अपनी भूमिका का दावा करते रहे हैं, जबकि भारत किसी तीसरे पक्ष की मध्यस्थता के दावे को स्वीकार नहीं करता। शहबाज शरीफ ने 2025 के संघर्ष के संदर्भ में कश्मीर मुद्दा भी उठाया। उन्होंने कहा कि दक्षिण एशिया को दोबारा उस स्थिति में पहुंचने से रोकने के लिए कश्मीर का न्यायपूर्ण और निष्पक्ष समाधान जरूरी है। भारत पाकिस्तान की ओर से अंतरराष्ट्रीय मंचों पर कश्मीर को लेकर किए जाने वाले दावों को खारिज करता रहा है। भारत ने 7 मई 2025 को पहलगाम आतंकी हमले के बाद आपरेशन सिंदूर शुरू किया था। 22 अप्रैल को हुए हमले में 26 नागरिकों की मौत हुई थी। इसके बाद भारत ने पाकिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में आतंकी ढांचे को निशाना बनाया था। शरीफ ने अपने भाषण में सिंधु जल संधि का मुद्दा भी उठाया। उन्होंने कहा कि सिंधु नदी प्रणाली पाकिस्तान और पूरे क्षेत्र के लिए महत्वपूर्ण है। उन्होंने भारत के संधि को स्थगित रखने के फैसले पर आपत्ति जताई और चेतावनी दी कि पाकिस्तान के हिस्से के पानी को रोकने या मोड़ने की किसी भी कोशिश को गंभीर कार्रवाई के रूप में देखा जाएगा।